हरिवंशपुराण (फोल्डर नं. ००१२७१)

मुख्य टाइटल

प्रधान सम्पादकीय --- ५

प्रस्तावना--- ९

विषय सूची --२१

संकेत सूची --३६

प्रथम सर्ग

मंगलाचरणके अन्तर्गत अनाद्यनिधन जिनशासन, तीर्थनायक श्री वर्धमान स्वामी...----------------१-३

समन्तभद्र, सिद्धसेन, देवनन्दी, वज्रसूरि, महासेन, रविषेण, वरांगचरितके कर्ता... ---------------------३-५

सज्जन-प्रशंसा, दुर्जन-निन्दा ---५-६

ग्रन्थकर्तृप्रतिज्ञा, ग्रन्थके मूलोत्तर ग्रन्थकर्ता---६-७

स्वाध्यायकी उपयोगिता, ग्रन्थ के वर्णनीय अधिकारों का संग्रह------------------------------------ ७-११

ग्रन्थकी महत्ता और उसके अध्ययनकी प्रेरणा---११

द्वितीय सर्ग

जम्बूद्वीप सम्बन्धी विदेह देशके कुण्पुर ग्राम में राजा सर्वार्थ और रानी श्रीमतीके... -----------१२-१३

भगवान् महावीर स्वामीके गर्भ और जन्म-कल्याणकका वर्णन-------------------------------------१४-१५

उनका वर्धमान नाम था, तीस वर्षकी अवयस्थामें जिनदीक्षा लेकर उन्होंने १२ वर्ष तक...-----१६-१७

पश्चात् राजगृहीके विपुलाचलपर आये। वहाँ देवोंने एक योजन विस्तृत समवसरणकी...--------१७-१९

श्रावण कृष्ण प्रतिपदाके दिन अभिजित् नक्षत्र में भगवान्की प्रथम देशना हुई...----------------१९-२०

गौतम गणधर द्वारा द्वादशांगकी रचना, भगवान् की दिव्यध्वनि श्रवण कर राजा... -------------२१-२३

तृतीय सर्ग

भगवान् महावीरका भरतक्षेत्रके आर्यखण्ड सम्बन्धी अनेक देशोंमें विहार...----------------------२४-२७

भगवान् का पंचशैल-राजगृहपर पहुँचना, उसकी प्राकृतिक सुषमाका वर्णन...---------------------२७-४०

राजा श्रेणिक गौतम गणधरसे तीर्थंकरों, चक्रवर्तियों, बलभद्रों, नारायणों...-------------------------४०-४१

चतुर्थ सर्ग

अलोकाकाश और लोकाकाशका स्वरूप तथा उसका आकार---४२

अधोलोक और ऊर्ध्वलोकका विस्तार तथा वातवलयोंका वर्णन व विस्तार -----------------------४२-४५

अधोलोककी सात पृथिवियोंका वर्णन, रत्न प्रभा पृथिवी के खरभाग और पंकभागका निरूपण -४५-४६

अब्बहुल भागमें नारकियोंके बिलोंका वर्णन, सातों पृथिवियोंके पटलोंका वर्णन, घर्मा पृथिवीके प्रस्तार-क्रमसे बिलोंका वर्णन --४७-४९

द्वितीयादि पृथिवीके बिलों का वर्णन---४९-५२

प्रथमादि पृथिवियोंके महानरकोंका वर्णन तथा बिलोंका विस्तार -----------------------------------५२-५३

प्रथमादि पृथिवियोंके इन्द्रकबिलोंका विस्तार ---५४-५७

घर्मा आदि पृथिवियोंके बिलोंका परस्पर अंतर ---५७-५८

प्रथमादि पृथिवीके प्रस्तारोंमें जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुका वर्णन-----------------------------------५८-५९

प्रथमादि पृथिवीमें नारकियोंकी ऊँचाईका वर्णन ---६२-६३

प्रथमादि पृथिवियोंमें अवधिज्ञानका विषय, मिट्टी की दुर्गन्ध, लेश्याओंका वर्णन...---------------६६-६७

प्रथमादि पृथिवियोंके नारकी उपपाद स्थानोंसे गिरनेपर उछलना, असुरकुमारकृत... -------------६७-६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगामीकालमें तीर्थंकर होनेवाले नारकियोंकी विशेषता, प्रथमादि पृथिवियोंमें... ------------------६८-६९

पंचम सर्ग

तिर्यग्लोककी व्याख्या, जम्बूद्वीपके मेरुक्षेत्र, कुलाचलादिका विस्तार तथा भरतक्षेत्रके... ----------७०-७७
कुलाचलोंके सरोवर, उनकी गराई, कमल, कमलोंमें रहनेवाली देवियाँ तथा... ----------------------७७-७८
पद्मसरोवरसे निकलनेवाली गंगा, सिन्धु और रोहितास्या नदियोंके निर्गमन-द्वार... ---------------७८-८०
सिन्धु नदीकी गंगा नदीके साथ समानता, अन्य नदियोंके निर्गमन और प्रवाह तथा... --------८०-८१
जम्बूद्वीपके समान धातकीखण्ड द्वीपके क्षेत्रकुलाचल आदिका वर्णन, द्वितीय जम्बूद्वीप... --------८१-८२
जम्बूवृक्ष और शाल्मकी वृक्षका वर्णन तथा नीलादि कुलाचलों और सीता आदि... --------------८२-८५
विदेहक्षेत्रके वक्षारगिरि पर्वत, भद्रशाल वन और उकी वेदिकाका वर्णन----------------------------८५-८६
विभंगा नदियोंका वर्णन---८६
जम्बूद्वीप सम्बन्धी विदेहक्षेत्रके बत्तीस भेद, उनकी राजधानी आदिका वर्णन -------------------------८७
विदेहके कच्छा आदि प्रत्येक क्षेत्रमें बहनेवाली गंगा, सिन्धु आदि नदियोंका वर्णन------------------८८
वृषभाचल तथा देवारण्य और भूतारण्य वनों का वर्णन --८८-८९
जम्बूद्वीपके मेरु पर्वत तथा जगतीका वर्णन --८९-९६
देवारण्य तथा उसके प्रासाद आदिका वर्णन--९६-९७
संख्यात द्वीपोंके अनन्तर द्वितीय जम्बूद्वीपका वर्णन --९७-९९
लवण समुद्रके विस्तार, पाताल विवर समीपवर्तो पर्वत, गोतम देव, उनके अन्य अन्तर्द्वीप... - ९९-१०४
धातकीखण्ड द्वीपका वर्णन --१०४-१०८
कालोदधिका वर्णन ---१०८-१०९
पुष्करद्वीपका वर्णन ---१०९-११०
मनुष्यक्षेत्र और उसका विस्तार --- ११०
मानुषोत्तर पर्वतका वर्णन --११०-११२
आदिके सोलह द्वीपसमुद्रोंके नाम, समुद्रोंके जलका स्वाद, समुद्रोमें त्रसजीवोंका अस्तित्व... --११२-११४
आठवें नन्दीश्वर द्वीपका वर्णन--११४-११६
अरुणद्वीप तथा अरुणसागरमें अन्धकारका वर्णन ---११६-११७
कुण्डलवरद्वीप और कुण्डलगिरि तथा रुचकवर द्वीप और रुचकगिरिका वर्णन -----------------११७-११९
स्वयंभूरमण द्वीपके मध्यमें स्थित स्वयंप्रभपर्वतका वर्णन, स्वयंप्रभपर्वतके आगे... --------------- १२०

षष्ठ सर्ग

पृथिवीतलसे सात सौ नब्बे योजनकी ऊँचाईसे लेकर नौ सो योजनकी ऊँचाई तक स्थित... १२१-१२३
मेरु पर्वतकी चूलिकाके ऊपर ऊर्ध्वलोकके सौधर्मादि १६ स्वर्गोंके आठ युगल... --------------१२३-१२५
श्रेणीबद्ध, प्रकीर्णक तथा संख्यात-असंख्यात योजन विस्तारवाले विमानोंका वर्णन ------------१२५-१२६
पाँच पैंतल्ला ओर चार लखूरोंका वर्णन --१२६-१२७
श्रेणीबद्ध विमानोंका अवस्थानक्षेत्र, उनके शिलापट्टोंकी मोटाई तथा भवनोंकी गहराई आदिका वर्णन---१२७-१२८
कौन जीव कहाँ तक उत्पन्न होते हैं -- १२८
देवोंमें लेश्याएँ देवोंके अवधिज्ञानका विषय क्षेत्र, देवोंकी ऊँचाई, प्रविचार और देवियोंके उत्पत्ति-स्थानका वर्णन---१२८-१२९
सिद्धलोकका वर्णन तथा ऊर्ध्वलोकके वर्णनका समारोप --१२९-१३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्तम सर्ग
काल-द्रव्यका स्वरूप तथा उसका अस्तित्व, व्यावहारकालके समय, आवली... ------------------१३२-१३४
परमाणु तथा अवसंज्ञ, त्रुटिरेणु, त्रसरेणु और रथरेणु आदिका वर्णन -----------------------------१३४-१३५
व्यवहार पल्य, उद्धार पल्य, अद्धा पल्य तथा उत्सर्पिणी और अवसर्पिणीके...-------------------१३५-१३७
अवसर्पिणीके प्रथम कालके समय भरतक्षेत्रकी उत्तम भोगभूमि तथा
दस प्रकारके कल्पवृक्षों...---१३७-१४०
भोगभूमिमें उत्पत्तिके कारणोंका वर्णन करते हुए पात्र-कुपात्र-अपात्रका वर्णन------------------१४०-१४१
तृतीय कालके अन्तिम भागमें प्रतिश्रुति आदि चौदह कुलकरोंकी उत्पत्ति और उनके कार्य...१४१-१४५
अष्टम सर्ग
अन्तिम कुलकर नाभिराजके इक्यासी खण्डके सर्वतोभद्र भवनका वर्णन--------------------------- १४६
राजा नाभिराजकी महारानी मरु देवीके सौन्दर्यका वर्णन---१४६-१४८
नाभिराज और मरुदेवीके यहाँ भगवान् ऋषभदेवके गर्भावतारके छह माह पूर्वसे कुबेरके द्वारा...१४८-१५०
मरुदेवीका एरावत आदि १६ स्वप्न देखना देवियोंने उनकी स्तुति की ------------------------१५०-१५२
नाभिराज द्वारा स्वप्नोंके फलका निरूपण और भगवान् ऋषभदेवके गर्भावतारका वर्णन-----१५३-१५४
भगवान् ऋषभदेवका जन्म तथा रुचकगिरिनिवासिनी देवियोंके द्वारा अपने... ----------------१५४-१५६
जन्म-कल्याणकके लिए देवोंका आगमन और नगरकी तात्कालिक शोबाका वर्णन-----------१५६-१५७
जिनबालकको सुमेरु पर्वतपर ले जाकर इन्द्र द्वारा उनका क्षीरसागरके जलसे अभिषेक करना१५८-१५९
इन्द्राणी द्वारा भगवान् को लेप लगाकर अलंकार पहनाना। उनके सुसज्जित शरीरका...-----१५९-१६४
पर्वतसे वापस आकर जिनबालक मातापिताको सौंपना और आनन्द नाटक करना-----------१६४-१६५
नवम सर्ग
ऋषभदेवकी बालक्रीड़ा और शरीरकी सुन्दरताका वर्णन--१६६-१६७
युवा होनेपर उनका नन्दा और सुनन्दा के साथ विवाह --- १६७
कल्पवृक्षोंके नष्ट हो जानेपर भूख-प्याससे विह्वल प्रजाका नाभिराजकी सम्मतिसे... ----------१६७-१६९
नीलांजसा नामक नर्तकीको अकस्मात् विलीन देख भगवान् के वैराग्यका होना... -----------१६९-१७१
कुबेरनिर्मित पालकीका वर्णन--१७१-१७३
भगवान्का प्रथम ३२ कदम पैदल चलना, तदनन्तर पालकीपर सवार हो दीक्षास्थानपर... ---१७३-१७४
भगवान्का छह माहका योग लेकर ध्यानस्थ होना तथा साथमें दीक्षित हुए चार हजार... --१७४-१७६
नमि और विनमिको धरणेन्द्र द्वारा विजयार्धकी दोनों श्रेणियोंका राज्य प्रदान----------------१७६-१७७
छह माहका योज समाप्त होनेपर भगवान् आहार के लिए निकले-------------------------------१७७-१७९
भगवान् जब हस्तिनापुर आनेको हुए तब वहाँके राजा समोप्रभको स्वप्न दर्शन हुआ...-----१७९-१८२
पूर्वतालपुरके शकटास्य नामक वनमें भगवान् को केवलज्ञान उत्पन्न हो गया, समवसरण...१८२-१८४
दशम सर्ग
एक हजार वर्षका मौन खोलकर भगवान् ऋषभदेवने सबको संसार-सागरसे...--------------------- १८५
श्रुतज्ञानके पर्याय, पर्यायसमास आदि २० भेदोंका वर्णन, उसीके अन्तर्गत आचाराग... -------१८५-१९०
दृष्टिवाद अंगके पूर्वगत भेदोंका वर्णन, अंगबाह्यश्रुतका निरूपण, समस्त श्रुतके...--------------१९१-१९७
एकादश सर्ग
समवसरणसे वापस आकर भरतने पुत्रजन्मका उत्सव किया और
चक्ररत्नकी पूजा कर दिग्विजयके... --१९८-२००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तम भरत के म्लेच्छ राजाओं तथा उनके सहायक मेघमुख
देवको परास्त कर समस्त म्लेच्छ... --२००-२०२
जब चक्ररत्न अयोध्याके प्रवेश-द्वारपर रुक गया तब भरतके पूछनेपर बुद्धिसागर पुरोहितने...२०२-२०४
इस घटनासे बाहुबलीने विरक्त होकर दीक्षा धारण कर ली। उनकी तपस्याका वर्णन---------२०४-२०५
चक्रवर्ती भरतके वैभवका वर्णन ---२०५-२०८
द्वादश सर्ग
भरत समवसरणमें जाकर शलाकापुरुषोंका चरित्र सुनते थे। उन्होंने
तीर्थंकरोंके स्मरणार्थ अपने...--२०९-२११
विद्याधर और विद्याधरीको देख जयकुमार और सुलोचना मूर्च्छित हो गये।
अनन्तर जातिस्मरण द्वारा... -- २११
रतिप्रभ देवके द्वारा जयकुमारके शीलकी परीक्षाका वर्णन --- २११
जयकुमार द्वारा सुलोचनाके लिए भगवान् ऋषभदेवके समवसरणका वर्णन। जयकुमारने...--२११-२१५
त्रयोदश सर्ग
चक्रवर्ती भरतने अर्ककीर्तिको राजय दे दीक्षा धारण कर ली और वृषभसेन आदि... -------------- २१६
अर्ककीर्ति स्मितयशको राज्य देकर तप द्वारा मोक्षको प्राप्त हुए। सूर्यवंश और चन्द्रवंशके... २१६-२१७
अजितनाथ भगवान्, सगर चक्रवर्ती, उनके अद्रु आदि
साठ हजार पुर और कालक्रमसे होनेवाले... ---२१७-२१८
चतुर्दश सर्ग
जम्बूद्वीपके वत्सदेशमें कौशाम्बी नगरी थी। उसमें राजा सुमुख राज्य करता था। इस...----२१९-२२०
वसन्त ऋतुका वर्णन---२२०-२२१
वन विहारके लिए जाता हुआ राजा सुमुख मार्गमें एक सुन्दरीकी सुन्दरतापर आसक्त... ----२२२-२२३
मन्त्रीके पूछनेपर राजा सुमुखने उसे अपनी व्यग्रताका कारण बताया और मन्त्री... ---------२२४-२२५
सन्ध्या होनेपर सुमति मन्त्रीने आत्रेयी नामकी दूती उस-वनमाला सुन्दरीके
पास भेजी। वनमाला...---२२५-२२८
पञ्चदश सर्ग
राजा सुमुख और वनमाला प्रमसे रहने लगे। एक बार उन्होंने
`वरधर्म' नामक मुनि राजको... ---२२९-२३३
वनमालाके विरहमें उसके असली पति `वीरकी' सेठकी बड़ी दुर्दशा हुई। तदनन्तर वह... ----२३३-२३४
`वीरक'का जीव देव, अवधिज्ञानसे अपनी पूर्व प्रिया `वनमाला' और उसके अपहर्ता... --------२३४-२३६
षोडश सर्ग
भगवान् शीतलनाथके बाद कालक्रमसे नौ तीर्थंकरोंके मोक्ष चले जानेपर कुशाग्रपुरके... -----२३७-२३८
भगवान् मुनि सुव्रतनाथका जन्म। देवोंने क्षीरसागरके जलसे अभिषेक
कर जन्मोत्सव किया... ---२३८-२४०
शरद् ऋतुका साहित्यिक वर्णन--२४०-२४१
शरद् ऋतुके चन्द्रतुल्य उज्ज्वल मेघको तत्काल विलीन होते देख उन्हें वैराग्य आ गया... २४१-२४४
दीक्षाकल्याणकका वर्णन, वृषभदत्तके यहाँ आहारका निरूपण, देवोपनीत पंचाश्चर्य -------------२४४-२४५
तेरह मासकी छद्मस्थ अवस्था पूर्ण होनेपर उन्हें केवलज्ञान हुआ, देवोंने
समवसरणकी रचना की... ---२४६-२४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर्वाण-प्राप्तिका वर्णने -- २४७
सप्तदश सर्ग
उसी हरिवंशमें मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरके सुव्रत नामका पुत्र हुआ। सुव्रतके दक्ष नामका...-------- २४८
राजा दक्षने अपनी पुत्री मनोहरीकी सुन्दरतासे रीझकर उसे अपनी स्त्री
बना लिया। इस घटनासे... --२४८-२५०
राजा वसु, क्षीरकदम्बकका पुत्र पर्वत और नारदका वर्णने तथा उनके
`अजैर्यष्टव्यम्' वाक्यके...--२५०-२६१
अष्टादश सर्ग
राजा वसुके बृहद्ध्वज नामक पुत्रसे मथुरामें सुबाहु पुत्र हुआ। इसे आदि लेकर अनेक... ---२६२-२६३
राजा भोजक वृष्णिकी पद्मावती नामक पत्नीसे उग्रसेन, महासेन आदि पुत्र हुए।
राजा वसुके... ---२६३-२६४
कदाचित् सौर्यपुरके गन्धमादन पर्वतपर सुप्रतिष्ठ मुनिराजको उपसर्गके बाद
केवलज्ञानकी प्राप्ति हुई -- २६४
सुप्रतिष्ठ केवलीके द्वारा धर्मका विस्तृत उपदेश, जिसमें मुनि तथा श्रावकोंके व्रतोंका वर्णन...२६४-२६९
आदिका वर्णन ---२६४-२६९
अन्धकवृष्णिके भवान्तरका वर्णन ---२६९-२७०
अन्धकवृष्णिके समुद्रविजय आदि दस पुत्रोंके भवान्तरोंका निरूपण ---------------------------२७०-२७५
सुप्रतिष्ठ केवलीका विहार और समुद्रविजय को राज्यप्राप्तिका वर्णन--------------------------------- २७५
एकोनविंश सर्ग
राजा समुद्रविजयने अपने आठ छोटे भाइयोंके विवाह किये। वसुदेव अत्यन्त सुन्दर थे... २७८-२७९
एक दिन कुब्जा दासीके द्वारा कुमार वसुदेव को अपने कैद होनेका पता लग गया... -------२७९-२८०
वसुदेवका भारतवर्ष एवं विजयार्ध पर्वतकी दोनों श्रेणियोंमें परिभ्रमण कर अनेक विद्याधर... २८०-२८५
उसी परिभ्रमणके समय वसुदेव चम्पापुरीमें आये और सेठ चारुदत्तकी गन्धर्वसेना... --------२८५-२९७
विंशतितम सर्ग
राजा श्रेणिकके प्रश्नके उत्तरमें गौतम गणधर सम्यग्दर्शनको विशुद्ध करनेवाली विष्णुकुमार...---- २९८
हस्तिनापुरके महापद्म चक्रवर्ती और उनके पुत्र विष्णुकुमारकी दीक्षाका वर्णन। बलि... ------२९८-२९९
किसी समय अकम्पनाचार्य आदि पूर्वोक्त मुनियोंका संघ हस्तिनापुर पहुँचा तो बलि...------२९९-३०३
एकविंशतितम सर्ग
कुमार वसुदेवके पूछनेपर चारुदत्तने आत्मकथा सुनाथी। जिसके अन्तर्गत
चारुदत्तकी उत्पत्ति... --३०४-३१८
द्वाविंशतितम सर्ग
चम्पापुरी में गन्धर्वसेनाके साथ वसुदेव रह रहे थे कि इसी बीच में फाल्गुनका अष्टाह्निका...३१९-३२२
एक समय वसुदेव एकान्त स्थानमें बैठा था, उसी समय एक वृद्ध विद्याधरीने
आकर उन्हें आशीर्वाद...---३२२-३२७
एक बार एक वेतालकन्या रात्रिके समय वसुदेवको खींचकर श्मशान ले गयी,
वहाँ उसने अपना...---३२७-३३०
त्रयोविंशतितम सर्ग
कुमार वसुदेव नीलयशाके साथ सुखसे रहते थे। वर्षा ऋतु आयी और उसके बाद शरद्... --३३१-३३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनार्ष वेदोंकी उत्पत्तिका वर्णन करते हुए सगर राजा, सुलसा और मधुपिंगलकी
रोचक कथा... ---३३४-३४३
चतुर्विंशतितम सर्ग
कुमार वसुदेवने तिलवस्तु नगरमें जाकर नर-मांसभोजी सौदासको नष्ट किया।
इसी प्रकरण...---३४४-३४५
कुमार वसुदेवका अचलग्रामके सेठकी पुत्री वनमालाके साथ विवाह हुआ।
तथा वेदसामपुरके... ---३४५-३५०
पञ्चविंशतितम सर्ग
मदनवेगाके भाई दधिमुखने अपने पिताको बन्धनसे छुड़ानेके लिए वसुदेवसे
प्रार्थना की। इसी... ---३५१-३५४
दधिमुखकी प्रार्थ सुन वसुदेवने युद्ध द्वारा त्रिशिखरको मारा और अपने श्वसुर को बन्धनसे
मुक्त किया---३५४-३५६
षड्विंश सर्ग
कुमार वसुदेवसे मदनवेगाके अनावृष्टि नामका पुत्र हुआ। एक दिन
सब विद्याधर अपनी-अपनी... --३५७-३५८
एक दिन मदनवेगा कारणवश कुमारसे कुपित हो भीतर चली गयी।
इसी बीचमें त्रिशिखर...--३५८-३६०
कुमार वसुदेवने नागपाशसे बद्ध बालचन्द्राको छुड़ाया जिससे उसे विद्या सिद्ध
हो गयी और...---३६०-३६१
सप्तविंशतितम सर्ग
विद्युद्दंष्ट्रने संजयन्त मुनिपर उपसर्ग किस कारण किया? राजा श्रेणिकके इस
प्रकार प्रश्न करनेपर... ---३६२-३७२
अष्टाविंशतितम सर्ग
वेगवतीसे रहित वसुदेव एक बार तापसोंके आश्रममें गये वहाँ विकथा करते हुए...----------३७३-३७७
एकोनत्रिंशत्तम सर्ग
वसुदेव कुमारका बन्धुमती और प्रियंगु सुन्दरी कन्याओंकी प्राप्तिका वर्णन -------------------३७८-३८३
त्रिंशत्तम सर्ग
कार्तिककी पूर्णिमाकी रात्रिमें कुमार वसुदेव सुखसे सोये हुए थे कि एक
अतिशय रूपवती... ---३८४-३८८
एकत्रिंशत्तम सर्ग
अनेक कन्याओंको विवाहते हुए कुमार वसुदेव अरिष्टपुर नगर आये और वहाँ के
राजा रुधिरकी...---३८९-३९९
द्वात्रिंशत्तम सर्ग
वसुदेवके रोहिणी स्त्रीसे `राम' नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। एक विद्याधरीकी प्रार्थना सुन... ----४००-४०३
त्रयस्त्रिंशत्तम सर्ग
वसुदेव शस्त्रविद्याका उपदेश देते हुए सौर्यपुरमें रहने लगे। किसी समय वे
कंस आदि शिष्योंके...---४०४-४०६
कंस, वसुदेवको मथुरा ले आया और बहन देवकीका उनके साथ विवाह कर दिया---------------- ४०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अतिमुक्तक मुनिके द्वारा देवकीका पुत्र तुम्हारे पतिको मारेगा यह
भविष्यवाणी सुन कंसकी... --४०६-४११
बलदेव सहित, देवकीके सातों पुत्रोंके पूर्वभवोंका वर्णन---४११-४१८
चतुस्त्रिंशत्तम सर्ग
अतिमुक्तक मुनिके मुखसे यह बात सुनकर कि `हमारे वंशमें बाईसवें तीर्थंकर
उत्पन्न होंगे' वसुदेव... --४१९-४४७
पञ्चत्रिंशत्तम सर्ग
अतिमुक्तक मुनिके मुखसे भगवान् नेमिनाथके पूर्वभव सुनकर वसुदेव बहुत प्रसन्न हुए...--४४८-४४९
तदनन्तर देवकीने स्वप्न-दर्शनपूर्वक कृष्ण को गर्भमें धारण किया।
भाद्रपद मास शुक्ला... ---४५०-४५२
श्रीकृष्ण नन्द और यशोदाके यहां बढ़ने लगे। निमित्तज्ञानीके कथनसे शंकित हो कंस...----४५२-४५४
देवकी उपवासके बहाने कृष्णको देखनेके लिए गयी। कृष्णकी बालक्रीड़ा और लोकोत्तर... -------- ४५४
षट्त्रिंशत्तम सर्ग
शरद् ऋतुका साहित्यिक वर्णन, श्रीकृष्णको मारनेके लिए कंसके विविध प्रयत्न,
मल्लयुद्धके... ---४५९-४६५
कृष्ण अपने माता-पिता तथा समुद्रविजय आदिसे मिलकर प्रसन्न हुए। सुकेतु
विद्याधरने... --४६६-४७०
सप्तत्रिंशत्तम सर्ग
भगवान् नेमिनाथके गर्भमें आनेके छह माह पूर्वसे समुद्रविजयके घर रत्नोंकी वर्षाहोने...----४७१-४७४
राजा समुद्रविजयने स्वप्नोंका फल बतलाते हुए कहा कि... -------------------------------------४७४-४७७
अष्टत्रिंशत्तम सर्ग
देवोंने भगवान् के माता-पिताका अभिषेक कर वस्त्राभुषणोंसे उनकी पूजा की।
शिवा देवी...--४७८-४८२
देवियोंके द्वारा जातकर्मका वर्णन--४८२-४८३
सौर्यपुरकी अद्भुत शोभा हो रही थी। इन्द्र भगवान् को ऐरावत हाथीपर विराजमान कर...---४८३-४८६
एकोनचत्वारिंशत्तम सर्ग
इन्द्र द्वारा भगवान् का स्तवन --४८७-४८९
देवों द्वारा शंखादि वादित्रोंका वादन और भगवान् की परिचर्याका वर्णन ----------------------४९०-४९३
चत्वारिंशत्तम सर्ग
यादवों द्वारा अपने भाई अपराजितका वध सुन जरासन्ध बहुत कुपित हुआ और उनका... -४९४-४९७
एकचत्वारिंशत्तम सर्ग
समुद्रविजय आदिके द्वारा समुद्रकी शोभाका अवलोकन--४९८-४९९
कृष्णने अष्टमभक्त कर पंचपरमेष्ठीका ध्यान किया। इन्द्रकी आज्ञासे गौतम
देवने समुद्रको... --५००-५०३
द्वाचत्वारिंशत्तम सर्ग
द्वारिकामें नारदका आगमन---५०४-५०५
नारदकी उत्पत्ति का वर्णन-- ५०५
नारद कृष्णके अन्तःपुरमें गये परन्तु सत्यभामा अपनी साज-सजावटमें लीन थी... ---------५०५-५०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब वे कुण्डिनपुरमें स्थित राजा भीष्मके अन्तःपुरमें पहुँचे। वहाँ रुक्मिणीको देख...--------५०७-५१३
त्रिचत्वारिंशत्तम सर्ग
सत्यभामा और रुक्मिणीके सपत्नीभावका वर्णन--५१४-५१६
रुक्मिणी और सत्यभामाके गर्भका वर्णन तथा दोनोंके पुत्रोंकी उत्पत्तिका निरूपण-----------५१६-५१७
रुक्मिणीके पुत्रको पूर्वभवका वैरी `धूमकेतु' नामका असुर हरकर ले
गया और खदिराटवीमें...---५१७-५१९
रुक्मिणीका विलाप, कृष्णके द्वारा दी गयी सान्त्वना, नारदका आगमन और सीमन्धर...----५१८-५३२
चतुश्चत्वारिंशत्तम सर्ग
सत्यभामाके पुत्रका नाम भानुकुमार रखा गया। श्रीकृष्णका जाम्बवती, लक्ष्मणा...-----------५३३-५३७
पञ्चचत्वारिंशत्तम सर्ग
किसी समय यादवोंके भानेज युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, सहदेव और नकुल द्वारिका आये...-----५३८-५४१
लाक्षागृहमें आग लगवा देनेसे पाण्डव अपनी माता कुन्तीके साथ अज्ञात रूपसे बाहर...----५४१-५५०
षट्चत्वारिंशत्तम सर्ग
पाण्डव दुर्योधनके साथ जुआ खेले और अपना सब राज-पाट हारकर बारह वर्ष तक... -----५५१-५५६
सप्तचत्वारिंशत्तम सर्ग
कीचकका उपद्रव शान्त कर पाण्डव हस्तिनापुर वापस आ गये। धीरे-धीरे दुर्योधनका... ----५५७-५५८
युधिष्ठिर आदिको लक्ष्मीमती आदि कन्याएँ प्राप्त हुई--- ५५८
प्रद्युम्नकी चेष्टाओंका वर्णन---५५८-५६०
प्रद्युम्नकी शोभा देख कालसंवरकी स्त्री कनकमाला कामसे वह्वल हो गयी और...-------------५६०-५६३
प्रद्युम्नका द्वारिका आना और तरह-तरहकी अद्भुद चेष्टाएँ दिखाना ------------------------------५६३-५६८
अष्टचत्वारिंशत्तम सर्ग
सत्यभामाके सुभानु और जाम्बवतीके शम्ब नामक पुत्रकी उत्पत्ति हुई। सुभानु और...------५६९-५७१
यदुवंशके कुमारों का वर्णन---५७१-५७४
एकोनपञ्चाशत्तम सर्ग
कृष्णकी छोटी बहनकी सुन्दरता और तपस्याका वर्णन। इसी प्रसंगमें मुनिराजने...---------५७५-५८०
विन्ध्याटवीमें उसे सिंहने खा लिया सिर्फ़ तीन अंगुलियाँ बचीं। उनमें त्रिशूलकी...-----------५८०-५८२
पञ्चाशतम सर्ग
द्वारिकामें यादवों के बढ़ते वैभवको सुन जरासन्धका क्रोध भड़क उठा और वह युद्ध...------५८३-५९२
एकपञ्चाशत्तम सर्ग
युद्धका अवान्तर वर्णन। राजा रुधिरका पुत्र वीर हिरण्यनाभ मारा गया जिससे एक...------५९३-५९६
द्वापञ्चाशत्तम सर्ग
युद्ध अपने पूर्ण उत्कर्षपर पहुँच गया और श्रीकृष्णके द्वारा जरासन्ध मारा गया -------------५९७-६०३
त्रिपञ्चाशत्तम सर्ग
कृष्ण नारायणके रूपमें प्रसिद्ध हुए। अनेक विद्याधरोंने वसुदेवके साथ आकर कृष्णको...----६०४-६०८
चतुःपञ्चाशत्तम सर्ग
नारदके द्रौपदीसे रुष्ट होकर अपनी प्रतिशोधकी भावना प्रगट की। और उसका
चित्र बनाकर...--६०९-६१५
पञ्चपञ्चाशत्तम सर्ग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीकृष्णकी सभामें नेमिकुमार गये और प्रसंगवश `सबसे अधिक बलवान्
कौन है' इसकी परीक्षा...--६१६-६३४
षट्पञ्चाशत्तम सर्ग
भगवान् नेमिनाथकी तपश्चर्या और केवलज्ञानकी उत्पत्तिका वर्णन -----------------------------६३५-६४५
सप्तपञ्चाशत्तम सर्ग
भगवान् के समवसरणका वर्णन ---६४६-६५९
अष्टपञ्चाशत्तम सर्ग
वरदत्त गणधरके पूछनेपर भगवान् की दिव्यध्वनिमें जीवाजीवादि तत्त्वोंका
विस्तृत विवेचन हुआ... --६६०-६९३
एकोनषष्टितम सर्ग
भगवान् नेमिनाथके विहारका अनुपम वर्णन --६९४-७०५
षष्टितम सर्ग
वसुदेवसे देवकीके कृष्ण जन्मके पूर्व जो छह युगल पुत्र हुए थे उनकी तपस्याका वर्णन -------- ७०६
सत्यभामा आदि रानियोंके भवान्तरोंका वर्णन भगवान् की दिव्यध्वनिमें हुआ ---------------७०६-७१५
गजकुमारके निर्वेदका वर्णन। भगवान् नेमिनाथ एक बार रैवतकगिरिपर
आये। श्रीकृष्णने...---७१६-७५३
एकषष्टितम सर्ग
सोमशर्मा ब्राह्मणकी कन्याको छोड़ गजकुमार मुनि हो गये थे इसलिए उसने रुष्ट होकर... -७५४-७६२
द्विषष्टितम सर्ग
श्रीकृष्ण और बलदेव भ्रमण करते-करते कौशाम्ब वनमें पहुँचे, वहाँ कृष्णको
प्यासने सताया... ---७६३-७६८
त्रिषष्टितम सर्ग
पानी लेकर जब बलदेव वापस आये तो कृष्णको चुपचाप पड़ा देख पहले तो
जागनेकी प्रतीक्षा... ---७६९-७८३
चतुःषष्टितम सर्ग
भगवान् नेमिनाथ विहार करते-करते पल्लव देशमें पहुँचे। वहाँ पाण्डवोंने उनसे अपने...----७८४-७९७
पंचषष्टितम सर्ग
पाण्डवोंकी तपस्या तथा उपसर्गका वर्णन। बलदेव सौ वर्ष तक तपकर ब्रह्म...-----------------७९८-८०३
षट्षष्टितम सर्ग
जरत्कुमारसे यादव वंशकी परम्परा चली। ग्रन्थके अन्तमें भगवान् महावीरके
निर्वाणका प्रसंग... --८०४-८११
परिशिष्टानि
हरिवंशस्थ-सुक्तयः-- ८१५
हरिवंशपुराणस्थ श्लोकानामकाराद्यनुक्रमः --- ८१७
शब्दानुक्रमणिका --- ८९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org